Registration No. 206 **ISSN :- 2348-6228**

CURRENT JOURNAL

Journal For All Research

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

Editor in Chief
Prof. J. N. Singh
Department of Sociology
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastava
Dept. of History
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Volume 2 **No. -7** **(July-Sept., 2015)**

Published by
Vishal Bharat Sansthan
Varanasi (U.P.) India

2

CURRENT JOURNAL

CONTENTS

1.	**Historical Development of Arbitration in India** ***Mayank Pratap***	.....	**01-06**
2.	**Principle of Strict Liability under Criminal Law in India** ***Shiv Kumar Saroj***	.....	**07-11**
3.	**Biotechnological Inventions and Protection of Traditional Knowledge** ***Harish Chandra Pandey***	.....	**12-22**
4.	**Comparative study of chemical ingredient of Tamsa river at the two extreme sites in Azamgarh city urban segment** ***Kiran Kumari***	.....	**23-26**
5.	**Theory Z of Motivation & India – A Review** ***Pawas Kumar***	.....	**27-32**
6.	धर्म और हमारा समाज *डॉ0 स्नेहलता शिवहरे, सुधीर कुमार*	.....	**33-39**
7.	हिन्दी लघु कथाओं में स्त्री पात्रों की भूमिका *डॉ. राजीव कुमार*	…..	**40-45**
8.	मानव जीवन का सम्पूर्ण विकास और वैदिक वाङ्मय *डा0 प्रीति वाधवानी*	…..	**46-52**
9.	आधुनिक भारत में मीडिया के सामाजिक सरोकार *डॉ0 सियाराम*	.....	**53-57**
10.	बाल श्रमिकों की सामाजिक–अर्थिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश *डॉ0 राम प्रसाद सिंह*	…..	**58-62**
11.	नई कहानी में मार्कण्डेय का स्थान *सतीश कुमार यादव*	.....	**63-66**

12.	अदम की कविताओं में स्त्री शोषण के दारुण स्वर उर्वशी	…..	**67-72**
13.	शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान का महत्व और उपयोगिता *डॉ0 संतोष कुमार सिंह*	…..	**73-76**
14.	ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) *डॉ0 आर0के0 मौय*	…..	**77-85**
15.	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का समग्र मूल्यांकनः एक अध्ययन *महेश प्रसाद राय*	…..	**86-91**
16.	भवानी प्रसाद मिश्रःगांधीवादी या मार्क्सवादी? *संजय, शोधार्थी*	…..	**92-97**
17.	*ओ३म्* वैदिक वाङ्मय में मूल्याधारित शिक्षा *डा0 प्रीति वाधवानी*	…..	**98-103**
18.	अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययपकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन *राम शरन यादव*	…..	**104-109**
19.	राज्य व्यवस्था पर महात्मा गाँधी के विचार *डॉ0 एस0के0 सिंह*	…..	**110-114**
20.	हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की शुरूआत *अविनाश के.*	…..	**115-120**
21.	हर्षकालीन कृषि व्यवस्था : एक परिशीलन *सतीश कुमार*	…..	**121-127**
22.	दलित साहित्य के निर्माण में दलित आंदोलन की भूमिका *अभिलाषा सिंह*	…..	**128-134**
23.	ग़ज़ल : एक सफ़र *नेहा श्रीवास्तव*	…..	**135-138**
24.	**प्रथमाविभक्तेः कारकत्वविचारः** *मनोजकुमारमिश्रः*	…..	**139-144**
25.	**आदिकवेः शब्दार्थगौरवम्** *अंजनीकुमारत्रिपाठी*	…..	**145-148**

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की शुरुआत

अविनाश के.*

इतिहास लेखन की ही भाँति 'साहित्येतिहास लेखन' आधुनिकता की एक देन है। होता यह है कि किसी नवीन धारणा, अवधारणा अथवा कला-तकनीक के आने के बाद, कोई भी समाज अपनी परम्परा में उसे खोजने का प्रयास करता है। साहित्येतिहास लेखन के सन्दर्भ में भी ठीक यही हुआ। डॉ.शिवकुमार ने इसी ओर इंगित करते हुए ठीक ही लिखा है कि "हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन तो दूर रहा, साहित्य की सामग्री का संग्रह भी आधुनिक काल से पूर्व नाममात्र ही हुआ।" नाभादस कृत 'भक्तमाल', बेनीमाधव कृत 'मूल गोसाँईं चरित', ध्रुवदास कृत 'भक्तनामावली', गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' एवं 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता', परिचयी साहित्य, बीतक साहित्य, आचार्य तुलसी कृत 'कविमाला', कालिदास कृत 'कालिदास हज़ारा', आचार्य भिखारीदास कृत 'काव्य निर्णय' आदि कई ग्रंथो का उल्लेख साहित्येतिहास ग्रंथों के आरंभिक रूप में किया जाता है। वैसे इन ग्रंथों को आधुनिक साहित्येतिहास लेखन के समक्ष उस प्रकार इतिहास ग्रंथ नहीं कहा जा सकता है, किन्तु इसमें इसके अंकुरण के बीज अवश्य मिलते हैं। इनमें से किसी भी ग्रंथ में साहित्येतिहास लेखन की कोई भी शर्त पूर्ण होती हुई नहीं दिखाई देती है, किन्तु इन्हें परम्परा के रूप में अवश्य प्रस्तुत किया जा सकता है। इन्हें एक प्रकार से इतिहास-बोध के आभाव में लिखित साहित्येतिहास भी कहा जा सकता है। अतः गार्सा द तासी के पूर्व साहित्येतिहास लेखन का सजग प्रयास हमारे यहाँ देखने को नहीं मिलता है। इससे पूर्व के ग्रंथों में अपनी परम्परा का उल्लेख तो मिलता है, किन्तु उनके यहाँ इतिहास-बोध, मूल्यांकन के लिए आवश्यक आलोचनात्मक चेतना तथा साहित्यिक बोध का पूर्ण अभाव देखने को मिलता है। वहाँ मूल्यांकन के आधार मूल्य चेतना या सम्प्रदायगत विचार आदि हैं। इन ग्रंथों को इन कारणों से साहित्येतिहास भले ही न कहा जा सकता हो, किन्तु परम्परा को जानने हेतु यहाँ इनका संक्षेप में परिचय प्राप्त करना आवश्य है।

नाभादास कृत 'भक्तमाल' (१५९२ ई.)

'भक्तमाल' एवं उसके रचनाकार के सन्दर्भ में जानकारी देते हुए डॉ.रामकुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास' में लिखा है - "इनका वास्तविक नाम नारायणदास था। ये जाति के डोम थे। इनका आविर्भाव काल संवत् १५५७ माना जाता है। ये स्वामी अग्रदास के शिष्य थे। ये भी रामोपासक थे और रामभक्ति के सम्बन्ध में इन्होंने बहुत ही सुन्दर पद लिखे हैं, किन्तु उन पदों की अपेक्षा इनका 'भक्तमाल' अधिक प्रसिद्ध है, जिसमें २०० भक्तों का परिचय ३१६ छप्पयों में दिया गया है। इन छप्पयों में किसी तिथि आदि का निर्देश नहीं है। भक्तों की कुछ प्रधान और प्रसिद्ध बातों का ही वर्णन किया गया है। यह ज्ञात होता है

* शोधछात्र–हिन्दी

कि इस पुस्तक द्वारा नाभादास कवियों और भक्तों के यश का प्रचार करना चाहते थे। इसी 'भक्तमाल' की टीका प्रियादास इस प्रकार देते हैं- "संवत् प्रसिद्ध दस सात सतउनहत्तर। फागु मास बदी सप्तमी बताय कै।।"

हिन्दी साहित्य के आरंभिक इतिहास लेखन में कवि-वृत्तसंग्रहों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिनमें 'भक्तमाल' सर्वोच्च है। यह हिन्दी साहित्येतिहास लेखन का आदि-स्रोत है। साहित्य और साहित्येतिहास दोनों दृष्टियों से 'भक्तमाल' के महत्व को इतिहासकारों-आलोचकों-साहित्येतिहासकारों ने स्वीकार किया है। इसकी अमाप लोकप्रियता का आधार इसका भक्ति एवं भक्तों के जीवन पर आधृत होना है। यह रचना इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए, इसकी देखा-देखी बंगाली, मराठी आदि भाषाओं में भी भक्तमाल लिखे गए और इसकी कई टीकाएँ भी हिन्दी-ब्रज में लिखी गई। इस आदि-स्रोत से हिन्दी के मध्यकालीन सन्त साहित्यकारों के जीवन की जानकारी देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इस महत्ता को स्पष्ट करते हुए डॉ.शिवकुमार ने लिखा है - "हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन तो दूर रहा, साहित्य की सामग्री का संग्रह भी आधुनिक काल से पूर्व नाममात्र ही हुआ। यदि भक्तमाल आदि ग्रंथो में भक्त कवियों का विवरण दिया भी गया हो, धार्मिक दृष्टिकोण श्रद्धातिरेक के कारण ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक न बन पाया।" इस प्रकार ऐतिहासिक महत्व होते हुए भी इसे आरंभिक इतिहास नहीं माना जा सकता । इतिहास-बोध के स्थान पर इसमें श्रद्धा-भाव का आधिक्य दिखाई देता है, जैसे-'कलि कुटिल जीव निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भयो।।' इसमें रचना की नहीं रचनाकार के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया गया है।

बेनीमाधव कृत 'मूलगोसाईं चरित'

जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसका रचनाकाल संवत् १६८७ (सन १६३० ई.) माना है। तुलसीदास का महत्व जानने में उन्हें इस ग्रंथ से काफी सहायता मिली थी । बेनीमाधव गोस्वामी तुलसीदास के शिष्य माने जाते हैं । इस शिष्य ने अपने गुरु के जीवन का लेखा-जोखा त्रोटक, दोहा-चापाई शैली में अलौकिक ढंग से प्रस्तुत ग्रंथ में लिखा है । अधिकांश विद्वान इसे एक अप्रमाणिक अथवा बाद की लिखित रचना मानते हैं, किन्तु अनेक इतिहासकारों ने इस ग्रंथ को तुलसीदास की जीवन-घटनाओं को जानने का आधार बनाया था । इतना ही नहीं हिन्दी के प्रथम परिपूर्ण इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी इस ग्रंथ के ऋणी हैं ।

वार्ता साहित्य

ये दोनों कृतियाँ जहाँ ब्रज और हिन्दी साहित्य के इतिहास के लिए प्रमुख आधार हैं, वहीं भाषा के विकास का आदि स्वरूप भी इनमें को देखने को मिलता है। यहाँ हमें साहित्येतिहास के आधारभूत सूत्र देखने को मिलते हैं। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' कृतियों में नाभादास ने ब्रज गद्य शैली में क्रमशः ८४ तथा २५२ वैष्णवभक्तों का परिचय दिया है। इन ग्रंथों में पुष्टिमार्गीय अष्टछापी कवियों के अतिरिक्त अन्य भक्त कवि भी सम्मिलित किए गए हैं। सूरदास का परिचय इसी में सर्वप्रथम सविस्तार पाया जाता है, जिसमें कहा गया है, "सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी को स्थल हुतौ सो सूरदासजी स्वामी हैं आप सेवक करते। सूरदासजी भवदीय हैं, गान बहुत आछौ करते। ताते बहुत लोक सूरदासजी के सेवक हुते।"

तुलसीदास का परिचय देते समय कवि ने अनेक त्रुटियाँ की हैं। इसमें अप्राणिक सन्दर्भों में से यह एक है। इसमें तुलसीदास को नंददास का बड़ा भाई बतलाया गया है, जो किसी भी कीमत पर इतिहाससम्मत

नहीं है। इसी कारण कई विद्वानों ने इन रचनाओं की प्रामाणिकता पर संदेह किया है। वार्ता एवं भक्तमाल को डॉ.रूपचन्द पारिक एक बहिर्साक्ष्य के रूप में आवश्यक बताते हुए लिखते हैं, "ये बहिर्साक्ष्य अन्तर्साक्ष्य की पुष्टि के लिए तो उपयोगी हैं ही साथ-ही-साथ स्वतंत्र रूप से कुछ नवीन सामग्री भी देते हैं। विशुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से इस सामग्री के महत्व के सम्बन्ध में मतभेद हो सकते हैं और जिसका होना स्वाभाविक है परन्तु साहित्येतिहास निर्माण में इनकी उपोयगिता अस्विकार नहीं की जा सकती।"

परिचयी साहित्य

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में भक्तों-सन्तों का परिचय पाने की दृष्टि से लिखा गया परिचयी साहित्य भी प्राप्त होता है। १४ सन्तों का परिचय देनेवाला डॉ.त्रिलोकीनारायण दीक्षित द्वारा सम्पादित 'परिचयी साहित्य' अत्यन्त उपयोग ग्रंथ है। इस परिचयी साहित्य में मध्यकालीन सन्तों का जीवन-वृत्त ही अधिकांशतः मिलता है। अनन्तदास, त्रिलोचन, रंका बंका, धन्ना, रैदास, कबीर, नामदेव और पीपा की परिचयी प्रसिद्ध है। डॉ.दीक्षित के इस संपादन ग्रंथ के अतिरिक्त सेउसमन परिचई, भरथरी परिचई भी मिलती हैं। यह परिचयी १७वीं से लेकर १९वीं शताब्दी के बीच लिखी गई मालुम पड़ती है।

भक्तों की बोधगम्यता के लिए इन परिचयी साहित्यों की भाषा सरल व सामान्य है। इन समस्त परिचयी रचनाओं में निर्गुणी कवियों की जीवनियाँ हैं, किन्तु इनमें से कुछ का सम्बन्ध सगुण कवियों से भी है। 'भक्तमाल' में प्रतिपाद्य विषय-वस्तु के समान परिचई साहित्य में भी भक्तों के चरित् गायन को महत्व दिया गया है। कहीं-कहीं साहित्य का उल्लेख मात्र किया गया है। अतः साहित्येतिहास लेखन में इनका जीवनियों को चमत्कृत रूप में जानने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है, इतना ही।

बीतक साहित्य

बीतक का अर्थ होता है - वृत्त या वृत्तान्त। बीतक साहित्य प्रणामी सम्प्रदाय का जीवनी साहित्य है, जिसमें प्राणनाथ स्वामी तथा उनके गुरु का वर्णन है। इनमें आनेवाले प्रमुख बीतकों में स्वामी लालादास, ब्रजभूषण और हंसराज स्वामी द्वारा लिखित बीतक विशेष उल्लेखनीय हैं। कृतियों के काल निर्धारण, कवियों के जीवन-वृत्त के निर्माण, मूल रचनाओं के निर्धारण के सम्बन्ध में इनका सहयोग लिया जा सकता है। वर्ता, भक्तमाल, परिचयी और बीतक के लेखन की परम्परा के महत्व को बताते हुए सुमन राजे ने कहा है, "सबसे पहली बात तो यही है कि जिन भक्तों के वृतान्त उपलब्ध होते हैं, उनमें से साहित्य रचना करने वाले कम ही हैं। अतः केवल कुछ चरित्रों से ही सहायता ली जा सकती है। दूसरी सीमा है - सम्प्रदाय बद्धता। इन ग्रंथों से कुछ विशिष्ट सम्प्रदाय के कवियों के सम्बन्ध में ही सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इन ग्रंथों का उद्देश्य इतिहास का आकलन न होकर आदर्श की स्थापना, चरित्रांकन में श्रद्धा और भक्ति का समावेश, अपने सम्प्रदाय का मुख्यतः एवं अन्य सम्प्रदायों का गौण रूप में कीर्तन तथा यथार्थ के स्थान पर अलौकिक घटनाओं एवं अतिरंजित चरित्रों की प्रधानता इत्यादि है।"

आदिग्रंथ/गुरुग्रंथ

मध्यकालीन कवि-वृत्त संग्रहों में इसका अधिक महत्व है, क्योंकि यह भक्तिकाल के विभिन्न सन्तों, भक्तों और गुरुओं की बाणियों का संकलन और प्रथम सम्पादन कार्य है। कवि-वृत्त संग्रहों में किस कवि को स्थान दिया जाना चाहिए और क्यों दिया जाना चाहिए, इसकी कोई निश्चित व्याख्या अथवा पद्धति निश्चित नहीं की जा सकती है। यह संकलनकर्ता पर निर्भर करता है कि वह किस कवि की रचनाएँ अपने संकलन में सम्मिलित करता है। कई संकलनों में समकालीन कवियों पर ही दृष्टिपात किया गया है तो किसी में पूर्ववर्ती कवियों पर भी नजर दौड़ाई गई है और किसी संग्रह में सात-आठ शताब्दियों पूर्व के कवियों की कविताओं को भी स्वीकृत किया गया है। इसी पद्धति को ध्यान में रखकर कई मध्यकालीन कवि-वृत्त संग्रहों की तरह आदिग्रंथ में भी कई सन्त-भक्त कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

इसके संग्रहकर्ता सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सन् १६०४ ई. में इसका सम्पादन कार्य पूर्ण किया, किन्तु कहा जाता है कि आदिगुरु नानक के समय से ही इसका संग्रह आरंभ हो गया था। बाद के समय में इसमें कई रचनाकारों की कविताएँ जुड़ती गई, जिसका सिलसिला गुरु तेगबहादुर एवं गुरु गोविन्दसिंह तक चलता रहा। फलतः इसमें छः-साथ शताब्दियों के कवियों की प्रातिनिधिक रचनाएँ संकलित होती गई। साहित्यिक दृष्टि से इसे कविताओं की प्रामाणिकता और कवियों की जानकारी देनेवाला ग्रंथ कहा जा सकता है, जिसे साहित्येतिहास का आधार बनाया गया है।

तुलसी कृत 'कविमाला'

गोस्वामी तुलसीदास से भिन्न आचार्य तुलसी ने १६५५ ई. में 'कविमाला' में कुल ७५ कवियों की कविताओं का संकलन किया। जिसका रचना विस्तार १४४३ ई.से १६४३ ई. तक है। ग्रियर्सन ने इसका संग्रहकाल १६५५ ई. ही बताया है तथा इन्होंने अपने इतिहास में, इससे छः कवियों के उल्लेख करने का आधार बताया है। इसी भाँति शिवसिंह सेंगर ने भी अपने 'शिवसिंह सरोज' के लेखन में इसके कई कवियों को आधार रूप में स्वीकार किया था। इन्होंने 'सरोज' की भूमिका में इसे बताया है। किन्तु आज यह ग्रंथ विलुप्त है। अतः कौन कवि थे और कितने कवियों का संकलन हुआ है, इसकी अनुपलब्धता के कारण जानना असंभव है, किन्तु सेंगर ने अपने ग्रंथ में इसका उल्लेख 'कविनाममाला संग्रह' शीर्षक से किया है।

कालिदास त्रिवेदी कृत 'कालिदास हजारा'

कालिदास त्रिवेदी द्वारा १७१८ में संग्रहीत 'कालिदास हजारा' में १४२८ ई. से लेकर १५१९ ई.तक के २१२ कवियों की एक हजार कविताओं का संग्रह किया गया है, जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों के विशेष तथ्य मिलते हैं। 'शिवसिंह सरोज' की प्रेरणा कृति 'कालिदास हजारा' ही है। शिवसिंह सेंगर ने ८५ कवियों का विवरणात्मक परिचय सर्वप्रथम इसी से प्रस्तुत किया था तथा सम्मानपूर्वक उल्लेख करते हुए धन्यवाद भी ज्ञापित भी किया है। ग्रियर्सन ने इस कृति को 'हजारा' नाम से उल्लेखित किया है और अपने इतिहास की सामग्री का आधार बताया है। उन्होंने कबीर, ग्वाल, ठाकुर, तोष और नन्दलाल का परिचय तथा विवरण इसी से ग्रहण किया था। सेंगर ने ४८ कवियों का हजारा में होने का उल्लेख किया है, परन्तु खण्डित प्रति मिलने से शेष अज्ञात ही रह जाते हैं, तथापि आज खण्डित प्रति में १५६ कवियों का विवरण मिलता है। कहा जाता है

कि इसमें हजार कवियों की कविताओं का उल्लेख मिलता है। पूर्ण कृति के अभाव में कुछ कहा नहीं जा सकता है।

अन्य परवर्ती ग्रंथ

रीतिकाल के उत्तरकालीन आचार्य भिखारीदास के ग्रंथ का उल्लेख करना भी आवश्यक है। उनके 'काव्यनिर्णय' ग्रंथ के एक पद में काव्य भाषा पर विचार करते समय ब्रज भाषा के कुछ कवियों की रचनाओं को उद्धृत किया गया है जो साहित्येतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। 'काव्यनिर्णय' में उत्कृष्ट ब्रज भाषा के २२ कवियों का उल्लेख मिलता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस ग्रंथ के प्रणयन का समय १८०६ संवत् बताया है।

केवल आठ-वर्ष के आग-पीछे रची हुई दो रचनाओं का उल्लेख 'मिश्रबन्धु विनोद' की भूमिका से ज्ञात होता है कि दलपतिराय वंशीधर कृत 'अलंकार रत्नाकर' का संकलन १७३५ ई. में हुआ है तथा प्रवीण कवि द्वारा संकलित 'सारसंग्रह' १७४६ ई. में संकलित किया गया जान पड़ता है। इसके अतिरिक्त ४४ कवियों का उपयोग मिश्रबन्धुओं ने किया है, जिसमें ४५ कुल संग्रहीत हैं।

वृन्दावन के गोविन्दानन्द घन ने 'रसिकगोविन्दानन्द घन' नामक रीतिकाव्य का संग्रह किया था, जिसमें चार प्रबंध मिलते हैं - नवरस, नायक-नायिका भेद, दोष और अलंकार। इसमें दुर्लभ उदाहरणों के साथ अज्ञात कवियों की कृतियाँ भी हैं।

श्रीधर उपनाम से रचना करनेवाले ओयल नरेश सुब्बा सिंह द्वारा १८१७ ई. में सम्पादित 'विद्वन्मोदतरंगिनी' है। इसका उल्लेख शिवसिंह सेंगर, जॉर्ज ग्रियर्सन और मिश्र बन्धुओं ने अपने इतिहास लेखन में प्रस्तुत किया है। यह ४५ कवियों का काव्य संग्रह है, जिसमें श्रीधर स्वयं एक कवि के रूप में संग्रहीत हैं।

इस प्रकार मध्यकाल तक के कवि-वृत्त संग्रहों में कवियों की कविताएँ एवं उनके सन्दर्भ में प्रायः चमत्कृत कर देनेवाली सामग्री उपलब्ध होती है। इस सामग्री को इतिहास नहीं कहा जा सकता है और ऐसा इन संग्रकर्ताओं को अपेक्षित भी नहीं रहा होगा। किन्तु ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी साहित्य का आरंभिक इतिहास लेखन इनके अभाव में असंभव-सा होता। इनमें से कई ग्रंथों ने आरंभिक हिन्दी साहित्येतिहास लेखन ही नहीं, अपितु वर्तमान साहित्येतिहास लेखन के लिए भी सामग्री उपलब्ध करवायी है। संभव है कि और भी ऐसे कवि-वृत्त संग्रह एवं कवि-नामावलियाँ तथा वार्ता साहित्य जैसे ग्रंथ लिखे या सम्पादित किए गए हों, किन्तु वे काल की गर्त में समा गए होंगे। उनकी उपलब्धता से हिन्दी साहित्येतिहास लेखन और भी लाभान्वित होता।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्येतिहास लेखन के अंकुरण काल के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के रूप में हम नाभादस कृत 'भक्तमाल', बेनीमाधव कृत 'मूल गोसाँईं चरित', ध्रुवदास कृत 'भक्तनामावली', गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' एवं 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता', परिचयी साहित्य, बीतक साहित्य, आचार्य तुलसी कृत 'कविमाला', कालिदास कृत 'कालिदास हज़ारा', आचार्य

भिखारीदास कृत 'काव्य निर्णय' आदि कई ग्रंथो का उल्लेख कर सकते हैं। इन ग्रंथों को आधुनिक साहित्येतिहास लेखन के समक्ष उस प्रकार इतिहास ग्रंथ नहीं कहा जा सकता है, किन्तु इसमें इसके अंकुरण के बीज आवश्य मिलते हैं।

'भक्तमाल' हिन्दी साहित्येतिहास लेखन का आदि-स्रोत है। इसमें हिन्दी के मध्यकालीन सन्त साहित्यकारों के जीवन की जानकारी मिलती है। इतिहास-बोध के स्थान पर इसमें श्रद्धा-भाव का आधिक्य दिखाई देता है। अनेक इतिहासकारों ने बेनीमाधव कृत मूल 'गोसाईंचरित' को तुलसीदास की जीवन-घटनाओं को जानने का आधार बनाया। अधिकांश विद्वान इसे एक अप्रमाणिक अथवा बाद की लिखित रचना मानते हैं। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' कृतियों में नाभादास ने ब्रज गद्य शैली में क्रमशः ८४ तथा २५२ वैष्णवभक्तों का परिचय दिया है। गुरु अर्जुनदेव द्वारा सन् १६०४ ई. में सम्पादित 'आदिग्रंथ' में कई मध्यकाल तक के कवियों की कविताओं का मूल पाठ मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से इसे कविताओं की प्रामाणिकता और कवियों की जानकारी देनेवाला ग्रंथ कहा जा सकता है, जिसे साहित्येतिहास का आधार बनाया गया है। तुलसी कृत 'कविमाला' में ७५ कवियों की कविताओं का संकलन किया गया है, जिसका उपयोग करने का उल्लेख शिवसिंह सेंगर ने किया है, किन्तु आज यह ग्रंथ अनुपलब्ध है। 'कालिदास हजारा' में १५६ कवियों का विवरण मिलता है। कहा जाता है कि इसमें हजार कवियों की कविताओं का उल्लेख मिलता है। पूर्ण कृति के अभाव में कुछ कहा नहीं जा सकता है। भिखारीदास के 'काव्यनिर्णय' में उत्कृष्ट ब्रज भाषा के २२ कवियों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त रीतिकाल में अनेक कवि-वृत्त संग्रह सम्पादित किए गए हैं, जिनसे तत्कालीन कवियों की प्रामाणिक रचनाओं का पता चलता है। इस प्रकार यह सामग्री इतिहास के लिए आधार तो बन सकती है, किन्तु स्वयं इतिहास नहीं कही जा सकती है। इन ग्रंथों का उपयोग हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा में आरंभ से ही होता आया है, सामग्री के रूप में इनका महत्व निर्विवाद है।

सन्दर्भ.

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ.रूपचन्द पारीक, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, प्रथम संस्करण : 1972.
2. हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास – डॉ.किशोरीलाल गुप्त, बिभू प्रकाशन, साहिबाबाद, संस्करण : 1978.
3. हिन्दी साहित्येतिहास दर्शन और हिन्दी साहित्य की ऐतिहासिक प्रक्रिया - डॉ.हरिश्चन्द्र मिश्र, श्यामा प्रकाशन संस्थान, दारागंज, इलाहाबाद, प्रथम आवृत्ति : 1996.
4. हिन्दी साहित्येतिहास में युग निर्धारण - डॉ.सुधा अग्रवाल, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 1989.

Registration No. 206 **ISSN :- 2348-6228**

CURRENT JOURNAL

Journal for All Research

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

Editor in Chief
Prof. J. N. Singh
Department of Sociology
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastava
Dept. of History
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Volume 4 **No. -14** **(April.-June. 2017)**

Published by
Vishal Bharat Sansthan
Varanasi (U.P.) India

CONTENT

1.	न्यू मीडिया के युग में स्वास्थ्य सेवा : एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन *डॉ0 मोहम्मद फ़रियाद*	.....	**1-5**
2.	"राजकाज और कविताई....." (कवि रहीम की कविता के सन्दर्भ में) *अनुराग शर्मा*	.....	**6-8**
3.	कबीर काव्य में उपदेशात्मक की समस्या *अभिनीत कुमार मिश्रा*	.....	**9-11**
4.	**THE DEVELOPMENT IN AGRARIAN STRUCTURE OF EARLY MEDIEVAL NORTHERN AND PENINSULAR INDIA FROM SIXTH-SEVENTH TO ELEVENTH-TWELFTH CENTURIES AD** ***Shail Bala Mishra***	.....	**12-18**
5.	**IMPACT OF MNREGA ON SOCIO-ECONOMIC CONDITION OF THE WOMEN JOB CARD HOLDERS (A case study of Nyaya Panchayat Gorihat, Block Munakot, District Pithoragarh, Uttarakhand, India)** ***Dr. Jag Deepak Joshi***	.....	**19-29**
6.	**LIQUIDITY MANAGEMENT IN BANKS: IMPORTANCE, BENEFIT AND WARNING INDICATORS** ***Ziaul Haque***	.....	**30-36**
7.	**EFFECTIVENESS OF A STRUCTURED TEACHING PROGRAMME ON KNOWLEDGE REGARDING HOME CARE OF INTELLECTUALLY DISABLED CHILDREN AMONG CAREGIVER** ***Mr. Anurag Singh***	.....	**37-43**
8.	**FACTOR AFFECTING E-COMMERCE AND ITS IMPACT ON PERFORMANCE** ***Mukesh Kumar Yadav*** ***Babita Devi***	.....	**44-51**

CONTENT

9.	नागरी लिपि का सशोंधन–कार्य एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रयास *डॉ0 अंजलि अस्थाना*	.....	**52-61**
10.	त्रिपुरासुन्दरी : काष्ठ निर्मित पैगोडा शैली का मंदिर, नग्गर, कुल्लू *डॉ0 शीतल राणा*	.....	**62-65**
11.	'कलम का सिपाही' का आलोचनात्मक अध्ययन *महामाया प्रसाद पाण्डेय*	.....	**66-68**
12.	**THE RISE AND GROWTH OF COMMUNALISM IN BENGAL : ITS IMPACT ON THE POLITICS OF BANGLADESH** ***Abhinav Kumar Mishra***	.....	**69-74**
13.	**BUSINESS AND FINANCIAL JOURNALISM TEACHING IN INDIA** ***Shreejay Sinha***	.....	**75-81**
14.	आदिकाल, नामकरण एवं काल विभाजन : एक पड़ताल *डॉ0 अविनाश के.*	.....	**82-85**
15.	कविता : पुरानी और नयी : सम्वेदना का देहरीदीपक *डॉ0 ज्योति मिश्रा*	.....	**86-87**
16.	नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व *डॉ0 शेलेन्द्र कुमार राव*	.....	**88-90**
17.	समकालीन हिन्दी कविता : स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ *सतीश कुमार पाण्डेय*	.....	**91-96**
18.	शिक्षा के वर्तमान परिपेक्ष्य में गाँधी का अहिंसावाद *दयाशंकर सिंह*	.....	**97-103**

***

 ISSN : 2348-6228/Vol.4/No.14

आदिकाल, नामकरण एवं काल विभाजन : एक पड़ताल

डॉ0 अविनाश के.*

आदिकाल का नामकरण एवं काल-विभाजन हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में सबसे जटिल एवं विवादास्पद रहा है, क्योंकि इसके साथ हिन्दी साहित्य का आरंभ, हिन्दी भाषा का आरंभ, हिन्दी और अपभ्रंश भाषा-साहित्य की विभिन्न परम्पराओं को स्थापित करना, आदिकाल का ही नहीं हिन्दी साहित्य का प्रथम कवि किसे माना जाए, किस अपभ्रंश से हिन्दी साहित्य का आरंभ माना जाए, उपलब्ध सामग्री की संदिग्धता-असंदिग्धता को किन प्रतिमानों पर परखा जाए, संभावित सामग्री की किस प्रकार खोज की जाए, केवल उल्लेख्य ग्रंथों को किस आधार पर असंदिग्ध माना जाए, भक्तिकाल से आदिकाल को किस आधार पर और कहाँ से अलग किया जाए, 'फुटकल खाते' के विद्यापति-खुसरो आदि कवियों को अन्त में किस युग में रखा जाए, भक्तिकालीन लोकाश्रयी साहित्य के बीज किस प्रकार वीर-श्रृंगार रस प्रधान आदिकाल में ढूँढ़े जाए, सिद्ध-जैन-नाथ साहित्य से सन्त काव्य का सम्बन्ध आदिकाल में विवेचित किया जाए अथवा उन्हें धार्मिक साहित्य कहकर साहित्य क्षेत्र से बाहर कर दिया जाए? आदि कई प्रश्न जुड़े हुए हैं।

जब गार्सा द तासी, ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु आदि शुक्लपूर्व साहित्येतिहासकारों ने अपने लेखन का आरंभ किया था, तब उनके सामने ऐसे कई प्रश्न उपस्थित थे, जिनमें सर्वप्रमुख था सामग्री की अपूर्णता एवं संदिग्धता। अपने ४० वर्षों के अनुसंधान के बाद भी तासी साहित्येतिहास में काल-विभाजन एवं नामकरण से इसी कारण बचते देखे जा सकते हैं। उन्होंने इस सन्दर्भ में अपनी विवशता इन शब्दों में कह-सुनायी है - "यदि मैंने कालक्रम वाली पद्धति ग्रहण की होती तो अनेक विभाग स्थापित करने पड़ते। पहले में, मैं उन लेखकों का पता रखता जिनका काल अच्छी तरह ज्ञात है, दूसरे उनको, जिनका काल सन्देहास्पद है, अन्त में, तीसरे उन्हें जिनका काल अज्ञात है। यही विभाजन उन रचनाओं के लिए भी करना पड़ता, जिन्हें इस अंश के प्रधान अंश में स्थान नहीं मिल सका। अपना कार्य सरल बनाने और पाठक की सहुलियत दोनों दृष्टियों से मुझे ये पद्धति छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।" इसी विवशता के चलते उन्होंने अपने ग्रंथ में नामकरण एवं काल-विभाजन की पद्धति को छोड़कर विधानुरूप विभाजन कर दिया। मौलवी करीमुद्दीन ने भी 'तबकातुश्शुअरा' में इसी पद्धति को अपनाया है। शिवसिंह सेंगर ने अकारादि क्रम में ८३८ कवियों की रचनाओं के २००० नमूने और १००३ कवियों का परिचय इसी विवशता के चलते प्रस्तुत कर दिए थे।

ऐडविन ग्रिब्ज़ ने आदिकाल के लिए संभवतः प्रथम बार इस नाम का प्रयोग करते हुए सन् १४०० ई. तक इसकी समय-सीमा मानी किन्तु उन्होंने इसके आरंभ के विषय में कोई टिप्पणी नहीं की है। ग्रियर्सन हिन्दी भाषा के आधार पर आदिकालीन साहित्य का आरंभ सन् ८०० ई. से राजस्थान के चारणों की रचनाओं से माना और इसका अन्त सन् १३०० ई. मानते हुए, इसमें चारणों की रचनाओं को प्रमुख मानकर इसका

* एकेडमिक कंसलटेंट, हिन्दी विभाग, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय, हैदराबाद

नामकरण 'चारण काल' किया। मिश्रबन्धुओं ने आदिकाल को भाषा के विकास से जोड़ते हुए उसका नामकरण 'प्रारंभिक काल' करते हैं, जिसकी समय-सीमा वे ७०० से १४४४ विक्रमी संवत् मानते हैं। उन्होंने पुनः इस काल को पूर्वारंभिक काल (७००-१३४३ विक्रमी संवत्) और उत्तरारंभिक काल (१३४४-१४४४ विक्रमी संवत्) शीर्षक के अन्तर्गत विवेचित किया है। इन साहित्येतिहासकारों ने आदिकाल की समय-सीमा तय करते समय भाषा के इतिहास को तो ध्यान में रखा ही किन्तु उन्होंने साथ ही यह भी माना कि प्राकृत की अन्तिम अवस्था भाषा एवं साहित्य हिन्दी साहित्येतिहास का हिस्सा है, इसलिए उन्होंने आदिकाल का समय तीन-चार सौ वर्ष पीछे से आरंभ किया। आचार्य शुक्ल ने प्रथमतः प्राकृत साहित्य को हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग नहीं माना, अपितु उन्होंने अपनी सुविधानुसार रचनाओं को आदिकालीन साहित्य के भीतर-बाहर किया। इसी क्रम में यह भी कह देना अप्रासंगिक न होगा कि आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्येतिहास में प्रथम बार प्रवृत्तियों, रचनाओं की प्रचुरता तथा प्रसिद्धि के आधार पर नामकरण करने का प्रयास किया। इस आधार पर उन्होंने आदिकाल का नामकरण 'वीरगाथा काल' करते हुए इस काल की अवधि संवत् १०५० से १३७५ ई. तक मानी है। इस सन्दर्भ में उनका तर्क है कि, "मुंज और भोज के समय (संवत् १०५० के लगभग) में तो ऐसी अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी का पुरा प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य रचनाओं में भी पाया जाता है। अतः हिन्दी साहित्य का आदिकाल संवत् १०५० से लेकर १३७५ तक अर्थात् महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक माना जा सकता है।" अपने नामकरण के तर्क रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसी काल के भीतर आनेवाली १२ रचनाओं का उल्लेख किया, जिनमें से कुछ प्राप्त नहीं होती हैं, कुछ संदिग्ध हैं और कुछ का समय बाद का सिद्ध होता है। ऐसे में आचार्य शुक्ल द्वारा आदिकाल को दिया गया नाम'वीरगाथा काल' अप्रासंगिक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त इस नामकरण में अव्याप्ति दोष भी देखा जा सकता है। उन्हीं के तर्क को माना जाए तो यह नामकरण उस काल की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं जनाभिरुचियों को भी अपने भीतर नहीं समेट पाती है। उस काल के प्रमुख सिद्धों, नाथों एवं जैनों का साहित्य इस नामकरण से बाहर हो जाते हैं, जो आदिकालीन वीरगाथात्मक साहित्य से कहीं अधिक प्रामाणिक सिद्ध होता है। आचार्य शुक्ल के समकालीन बाबू श्यामसुन्दर दास ने आदिकाल का नामकरण 'आदियुग', रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने 'बाल्यावस्था' किया और सूर्यकान्त शास्त्री के सम्पूर्ण नामकरण फ्रेंक ई. की. से यथावत् स्वीकार किया है। इन दोनों इतिहासकारों ने आचार्य शुक्ल द्वारा प्रस्तावित समय-सीमा को यथावत् स्वीकार कर लिया है। आचार्य शुक्ल के पूर्व एवं समकालीन साहित्येतिहासकारों द्वारा प्रस्तावित आदिकाल के नामों में आचार्य शुक्ल के अतिरिक्त ग्रियर्सन द्वारा दिया गया नाम ही अधिक चर्चा में रहा, अन्य सभी नामकरण अव्याप्ति तथा तर्करहितता के कारण मात्र इतिहास के अंग हैं।

इसके पश्चात् डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' (सन् १९३८ ई.) में हिन्दी साहित्य के प्रथम युग का काल निर्धारण करते समय डॉ.ग्रियर्सन और आचार्य शुक्ल के मतों का समन्वय करते हुए संवत् ७५०-१३७५ विक्रमी तक माना है। नामकरण करते समय उन्होंने इस समय-सीमा को दो भागों में विभाजित किया - संधिकाल (सं.७५० से १००० वि.) और चारण काल (१००० से १३७५ वि.)। उन्होंने काल के निर्धारण करने में युगीन प्रवृत्तियों को अधिक महत्व दिया और संधिकाल के अन्तर्गत अपभ्रंश साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ तथा जैन साहित्य का विवेचन किया तथा चारण काल के अन्तर्गत डिंगल काव्य का। किन्तु उन्होंने संधिकालीन प्रवृत्तियों को चारण काल में भी होने का उल्लेख किया है,

जिससे यह नामकरण अपने-आप सशंकित हो जाता है। काल-विभाजन में उन्होंने आदिकालीन साहित्य को दो भागों में बाँटकर अपने द्वारा दिए गए नामकरण को अधिक सार्थक सिद्ध करने का प्रयास किया है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य के प्रथम युग के समय का आरंभ सन् १००० ई. से तथा इसका अन्त सन् १४०० ई. तय करते हुए उसे आदिकाल नाम से अभिहित किया है। उन्होंने अपने नामकरण एवं काल-विभाजन पर तर्क देते हुए लिखा है - "दसवीं शताब्दी की भाषा गद्य में तत्सम शब्दों का व्यवहार बढ़ने लगा था। चौदहवीं शताब्दी तक के साहित्य में इसी प्रवृत्ति की प्रधानता मिलती है। वस्तुतः छन्द, काव्यरूप, काव्यगत रूढ़ियों और वक्तव्य वस्तु की दृष्टि से दसवीं से चौदहवीं शताब्दी तक का लोक भाषा का साहित्य परिनिष्ठित अपभ्रंश में प्राप्त साहित्य का ही बढ़ाव है।" द्विवेदी जी ने काल-विभाजन और नामकरण के सन्दर्भ में पूर्ववर्ती साहित्येतिहासकारों द्वारा की गई भूलों को सुधारते हुए इस काल की प्रामाणिक एवं अप्रामाणिक रचनाओं को छाँटने का कार्य किया और साथ ही उसकी एक निश्चित परम्परा की ओर भी संकेत किया। इसके लिए उन्होंने लोक साहित्य से लेकर संस्कृत साहित्य तक के सन्दर्भ दिए। यही कारण है कि उनके द्वारा प्रस्तावित आदिकाल का नामकरण आज भी हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में प्रचलित है। डॉ.सत्यकाम वर्मा ने 'हिन्दी साहित्यानुशील' में आचार्य द्विवेदी के इस काल-विभाजन एवं नामकरण को यथावत् स्वीकार किया है। केवल उन्होंने इस साहित्येतिहास के काल को 'लोकोन्मुखी साहित्य' कहना बेहतर समझा। इसके विपरित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'हिन्दी साहित्य : एक ऐतिहासिक समीक्षा' में आदिकाल को 'लौकिक साहित्य' का नाम देते हुए उसे सन् ११०० से १५०० ई. के बीच स्थित किया है।

अपनी नवीन साहित्येतिहास दृष्टि के साथ डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त ने हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन एवं नामकरण करने का प्रयास किया। हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (१९६५ ई.) में उन्होंने शालिभद्र सूरि कृत 'भरतेश्वर बाहुबलिरास' को हिन्दी की पहली रचना मानते हुए, इस काल का आरंभ सन् ११८४ ई. और अन्तिम सीमा १३५० ई. मानते हैं। उनके द्वारा इस काल को दिया गया नाम 'प्रारंभिक काल' ग्रियर्सन द्वारा उपयोग में लाया गया था। इसके अतिरिक्त इस काल-विभाजन एवं नामकरण से न तो युगीन परिस्थितियों का अभिज्ञान होता और न 'भरतेश्वर बाहुबलिरास' के पूर्व की अपभ्रंश की कृतियाँ इस काल के भीतर आती हैं। डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त की तरह ही आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा किया गया काल-विभाजन भी ग्रियर्सन और आचार्य शुक्ल के काल-विभाजन एवं नामकरण का मिश्रित रूप है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने आदिकाल की समय सीमा ८ वीं से १३ वीं शताब्दी मानते हुए इसे 'आरंभिक काल' के नाम से अभिहित किया, जो स्वीकृत नहीं हो सका। इसी प्रकार आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने आदिकाल के सन्दर्भ में आचार्य शुक्ल के किए गए नामकरण एवं काल-विभाजन को पूर्णतः स्वीकार कर अपना सहित्येतिहास लिखा।

डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी का 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास' शीर्षक ग्रंथ आचार्य शुक्ल की मान्यताओं की व्यापक स्तर पर स्वीकृति में लिखा गया है। अतः उन्होंने आदिकाल के सन्दर्भ में आचार्य शुक्ल एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी दोनों के नामकरण को स्वीकार तो किया, किन्तु उन्होंने अपने विवेचन के क्रम में 'वीरगाथा काल' को ही सिद्ध करने का प्रयास किया है। काल-विभाजन के सन्दर्भ में उन्होंने आचार्य शुक्ल के ही काल-विभाजन को विक्रमी संवत् से ईसा सहस्राब्द में रुपान्तरित करके अपना लिया है।

डॉ.बच्चन सिंह न तो आदिकाल नामकरण स्वीकार करते हैं और न वीरगाथा काल। उन्होंने 'दूसरा इतिहास' में दूसरे नाम के फेर में पड़कर आदिकाल को 'अपभ्रंश काल' कहते हुए इसकी पूर्वप्रचलित समय-सीमा सन् १००० से १४०० ई. स्वीकार की है। उन्होंने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा दिए गए नाम को 'बाबा आदम के जमाने का' बोध करानेवाला कहा है। वे इस काल की साहित्यिक भाषा को केन्द्र में रखकर नामकरण करने के पक्ष में हैं। इस तर्क को माना जाए तो भक्तिकाल को ब्रज, अवधी आदि; रीतिकाल को ब्रज, आधुनिक काल को खड़ी बोली काल कहा जाना चाहिए, किन्तु ऐसा संभव नहीं है। अतः यह नामकरण एक भ्रम निर्माण करता है और उनके शब्दों 'बाबा आदम' के जमाने का बोध करानेवाला नामकरण ही सर्वस्वीकृत होता है। परवर्ती इतिहासकारों में डॉ. सुमन राजे, डॉ.हरिश्चन्द्र वर्मा ने भी 'आदिकाल' को ही स्वीकार किया है। डॉ.सुमन राजे इस काल की समय सीमा आचार्य शुक्ल की ही तर्ज पर मानती हैं। 'आदिकाल' नामकरण को स्वीकार करते हुए भी उन्होंने इसे स्त्री साहित्य के सन्दर्भ में इसे 'मध्ययुगीन नवजागरण' की संज्ञा देती हैं। राहुल सांकृत्यायन ने इसके मूल में सिद्धों एवं दरबारी काव्य को मानते हुए इसे 'सिद्ध-सामन्त-युग' कहा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को 'बीज वपन काल' कहना उचित समझा, क्योंकि उनके अनुसार इस काल में हिन्दी साहित्य का बीज-वपन हुआ था, आरंभ हुआ था।

काल-विभाजन के सन्दर्भ में आदिकाल के आरंभ को लेकर सर्वाधिक विवाद रहे। इसमें हिन्दी भाषा के आरंभ और अपभ्रंश से उसकी भिन्नता को लेकर अधिकांश विवाद रहे। यही कारण है कि कई विद्वानों ने भाषा के आधार पर ही इस काल का नामकरण कर दिया। इस प्रकार हिन्दी के आलोक में देखने पर हिन्दी साहित्येहासों में आदिकाल के सन्दर्भ में किए गए काल-विभाजन एवं नामकरण में आचार्य शुक्ल एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा किए गए प्रयासों को स्वीकार किया जाता रहा है। शुक्ल जी द्वारा किया गया काल-विभाजन अधिकांश रूप में स्वीकृत हुआ, क्योंकि वह अधिक तर्कसंगत था। इसी क्रम में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा किया गया नामकरण 'आदिकाल' भी अपनी तर्कसंगत परिणति के कारण व्यापक प्रचलित हो गया है।

सन्दर्भ

1. हिन्दी साहित्येतिहास में युग निर्धारण - डॉ.सुधा अग्रवाल, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 1989
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : कालविभाजन एवं नामकरण – डॉ.रमेशचन्द्र गुप्त, निर्मल बुक एजेन्सी, कुरुक्षेत्र, संस्करण : 2002
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006.

****

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue – 154 B

Use of ICT in Teaching Learning Process

Guest Editor:
Dr. Leena Pandhare
Principal, Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Executive Editor of the issue:
Mr. Tejesh Beldar
Asst. Prof. Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Assistant Editor:
Mr. Bhaskar Narwate
Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.261 **ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February -2019 Special Issue – 154 B

Use of ICT in Teaching Learning Process

Guest Editor:
Dr. Leena Pandhare
Principal, Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Executive Editor of the issue:
Mr. Tejesh Beldar
Asst. Prof. Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Assistant Editor:
Mr. Bhaskar Narwate
Late Bindu Ramrao Deshmukh Arts and Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

Chief Editor:
Dr. Dhanraj Dhangar (Yeola)

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editors

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- **Mr.Tufail Ahmed Shaikh**- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, **Saudi Arabia.**
- **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur **[M.S.] India**
- **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- **Prof. Vinay Madgaonkar** - Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India**
- **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, **Goa, India**
- **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur **[M.S.] India**
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari
- **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon **[M.S.]**
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul **[M.S.]**
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik **[M.S.]**
- **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon **[M.S.]**
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar **[M.S.]**
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda **[M.S.]**

Advisory Board -

- **Dr. Marianna kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, **Trieste, Italy.**
- **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow **[U.P.] India**
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India.**
- **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,**Coimbatore**
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University **Pune, [M.S.] India**
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
- **Dr. S. B. Bhambar,** BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali ,** HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar –** M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by –

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com **Website :** www.researchjourney.net **Mobile :** 9665398258

'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue154B- Use of ICT in Teaching Learning Process
UGC Approved Journal
2348-7143
February-2019

शिक्षा के क्षेत्र में सुचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

डॉ. अविनाश.के
अकेडमिक एसोसिएट
डॉ.बी.आर.आंबेडकरसार्वत्रिकविश्वविद्यालय

avi.ktwr@gmail.com

सूचना व संचार प्रौद्योगिकी वर्तमान जीवन का एक जरुरी हिस्सा बन चूका है. सुचना एवं संचारप्रद्यौगिकी आज के समय में उनकार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रॉनिकमाध्यम से सूचना के पारेषण, संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन या आदान-प्रदान करते हैं। सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की इस व्यापक परिभाषा के तहत रेडियो, टीवी, वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन (लैंडलाइन और मोबाइल फोन दोनों ही), सैटेलाइट प्रणाली, कम्प्यूटर और नेटवर्क हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि बुनियादी रूप से आते हैं. इसके अलावा इन प्रौद्योगिकी से जुड़ी हुई सेवाएं और उपकरण, जैसे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई-मेल और ब्लॉग्स, सोशल मीडिया की साईट, वेब पोर्टल आदि भी आईसीटी के दायरे में आते हैं।

वर्तमान समय में सूचना युग शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने के लिए भी उपयोग में लाया जा रहा हैं. शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के आधुनिक रूपों को शामिल करने की आवश्यकता है। "इसे प्रभावी तौर पर करने के लिए शिक्षा योजनाकारों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को प्रौद्योगिकी,प्रशिक्षण, वित्तीय, शैक्षणिक और बुनियादी ढांचागत आवश्यकताओं के क्षेत्र में बहुत से निर्णय लेने की जरुरत होती है। अधिकतर लोगों के लिए यह काम न सिर्फ एक नई भाषा सीखने के बराबर कठिन होगा, बल्कि उस भाषा में अध्यापन करने जैसा होगा। सुचना प्रौद्योगिकी जहाँ खंड-खंड देशों को आपस में जोड़ने वाले उपग्रहों को जोड़ता है वहीँ वह कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों तक संचार के औजारों की पड़ताल करता है। यह शिक्षकों, नीति-निर्माताओं, योजनाकारों, पाठ्यक्रम बनाने वालों और अन्य को आईसीटी उपकरणों, शब्दावली और प्रणालियों के भ्रामक जाल में से रास्ता निकालने में मदद करेगा।"1

सुचना प्रौद्योगिकी उद्योग आधुनिक भारत के महत्वपूर्ण उद्योगों में से हैं, जिसके विकास और उसके विभिन्न पहलुओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है. इस उद्योग के महत्व को इस बात से भी आँका जा सकता हैं हाल के वर्षों में भारत तथा विदेशों में इस विषय पर कई सारे अनुसन्धान हुए हैं तथा इसके प्रभाव के विषय में बहुत कुछ लिखा भी गया है. इस आलेख के जरिये हम सुचना प्रौद्योगिकी के विविध पहलुओं पर बात करते हुए उसके साहित्य के संबंध में उपयोगिता की भी समीक्षा करने की कोशिश करेंगे.2

पिछले कुछ दशकों से प्रौद्योगिकी ने हर संभव मार्ग से हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। भारत एक सफल सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से सज्जित राष्ट्र होने के नाते सदैव सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर अत्यधिक बल देता रहा है, न केवल अच्छे शासन के लिए बल्कि अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, कृषि और शिक्षा आदि के लिए भी। शिक्षा नि:संदेह एक देश की मानव पूंजी के निर्माण में किए जाने वाले सर्वाधिक महत्वपूर्ण निवेशों में से एक है. शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो न केवल अच्छे साक्षर नागरिकों को गढ़ता है बल्कि एक राष्ट्र को तकनीकी रूप से समृद्ध भी बनाता है और इसके माध्यम से राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक वृद्धि की दिशा में मार्ग प्रशस्त होता है। भारत में ऐसे अनेक कार्यक्रम और योजनाएं चल रही हैं जिसके जरिये संचार के साथ शिक्षा को जोड़कर प्रस्तुत किया जा रहा हैं. लोकतंत्र में जन-कल्याणकारी नीतियों के तहत मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को केंद्र में रखकर सर्व शिक्षा अभिया, राष्ट्रीय साक्षरता

अभियान आदि योजनायें शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए सरकार द्वारा आरंभ किए गए हैं। हाल के वर्षों में इस बात में काफी रुचि रही है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को शिक्षा के क्षेत्र में कैसे उपयोग किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदानों में से एक है 'अधिगम्यता पर आसान पहुंच' संसाधन की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से छात्र अब ई-पुस्तकें, परीक्षा के नमूने वाले प्रश्न पत्र, पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र आदि देखने के साथ संसाधन व्यक्तियों, मेंटोर, विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, व्यावसायिकों और साथियों से दुनिया के किसी भी कोने पर आसानी से संपर्क कर सकते हैं और कर भी रहें हैं। सुचना प्रौद्योगिकी की सबसे बड़ी बात है की वह प्रयोग और उपयोग की दृष्टि से सबसे अधिक सुविधाजनक है. उसे किसी भी समय-कहीं भी उपलब्ध किया जा सकता है. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सर्वाधिक अनोखी विशेषता यह है कि इसे समय और स्थान में समायोजित किया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने डिजिटल अभिगम्यता को संभव बनाया है। अब छात्र किसी भी समय अपनी सुविधानुसार ऑनलाइन अध्ययन पाठ्यक्रम सामग्री को पढ़ सकते हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा आपूर्ति रेडियो और टेलिविजन पर शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण) से सभी सीखने वाले और अनुदेशक को एक भौतिक स्थान पर होने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है. जब से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को एक शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग किया गया है, इसने एक त्रुटिहीन प्रेरक साधन के रूप में कार्य किया है, इसमें वीडियो, टेलिविजन, मल्टीमीडिया कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर का उपयोग शामिल है जिसमें , ध्वनि और रंग निहित है। इससे छात्र सीखने की प्रक्रिया में गहराई से जुडते हैं। "एक ऐसा समय था जब छात्र अपनी परीक्षा के परिणाम जानने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते रहते थे, तथापि, पिछले 10 वर्षों से परीक्षा के परिणाम और विभिन्न शैक्षिक, प्रवेश और भर्ती परीक्षाओं के परिणाम जो अनेक मंडलों/संस्थानों/आयोगों (उदाहरण के लिए सी बी एस ई, आई सी एस ई, राज्य शिक्षा मंडल, यू पी एस सी, कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी), आईसीएआई, जीजीएसआईपीयू आदि) द्वारा आयोजित परीक्षाओं के परिणाम इंटरनेट पर आसानी से देखे जा सकते हैं। छात्रों या प्रत्याशियों को वेबसाइट में दिए गए उपयुक्त स्थान पर केवल अपना रोल नंबर लिखना होता है और परीक्षा का परिणाम/अंक सूची स्क्रीन पर आ जाती है। इस प्रयोजन के लिए एक विशेष पोर्टल (http://results.gov.in - बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) पिछले कुछ वर्षों से वेब पर परीक्षा का परिणाम सुविधाजनक रूप से देखने के लिए अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। वेब के अतिरिक्त ई मेल, एसएमएस (संक्षिप्त संदेश सेवा) और आईवीआरएस (अंत:क्रियात्मक वाणी प्रत्युत्तर प्रणाली) के जरिए भी परिणाम जाने जा सकते हैं।"3 भारत सरकार द्वारा विभिन्न व्यावसायक पाठ्यक्रमों जैसे बी.ई., बी.आर्क, बी.फार्मा, एम.बी.ए., एम.सी.ए., एम.बी.बी.एस., बी.डी.एस., बी.एड. आदि में प्रवेश के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की जो पहल है उसके लिए सुचना प्रौद्योगिकी के उपयोगी पहलु का दुसरा पक्ष है. इन कोर्सेज में प्रवेश के लिए आयोजन मंडलों जैसे अखिल भारतीय इंजीनियरी प्रवेश परीक्षा, अखिल भारतीय पूर्व चिकित्सा परीक्षा, राज्य मंडल (उ. प्र., हरियाणा, केरल) द्वारा ऑनलाइन किया जा रहा है। इससे छात्रों को व्यक्तिगत परामर्श सत्रों में होने वाली परेशानियों से बचाया जा सकता है। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है, दिन छोटे लगने लगते है, 24 घंटे उन सभी लक्ष्यों के लिए कम लगते जो हम पूरे करना चाहते है तथा एक साथ बहुत सारे कार्य पूरे करना जीवन का तरीका बन जाता है। हम में से अनेक लोग अपनी शिक्षा जारी रखता चाहते है किंतु समय की सीमाओं के कारण पढ़ाई जारी रखना कठिन हो जाताहै। इसलिए कई लोग और छात्र दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से पढ़ने का विकल्प अपनाते हैं, जिससे वे अपनी शिक्षा आराम से जारी रख सकें। अब आप विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों की वेबसाइट आसानी से देख कर वहां दिए जा रहे दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के बारे में जान सकते हैं और नवीनतम जानकारी ले सकते हैं। छात्र

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 SPECIAL ISSUE- 117

Literature & Translation

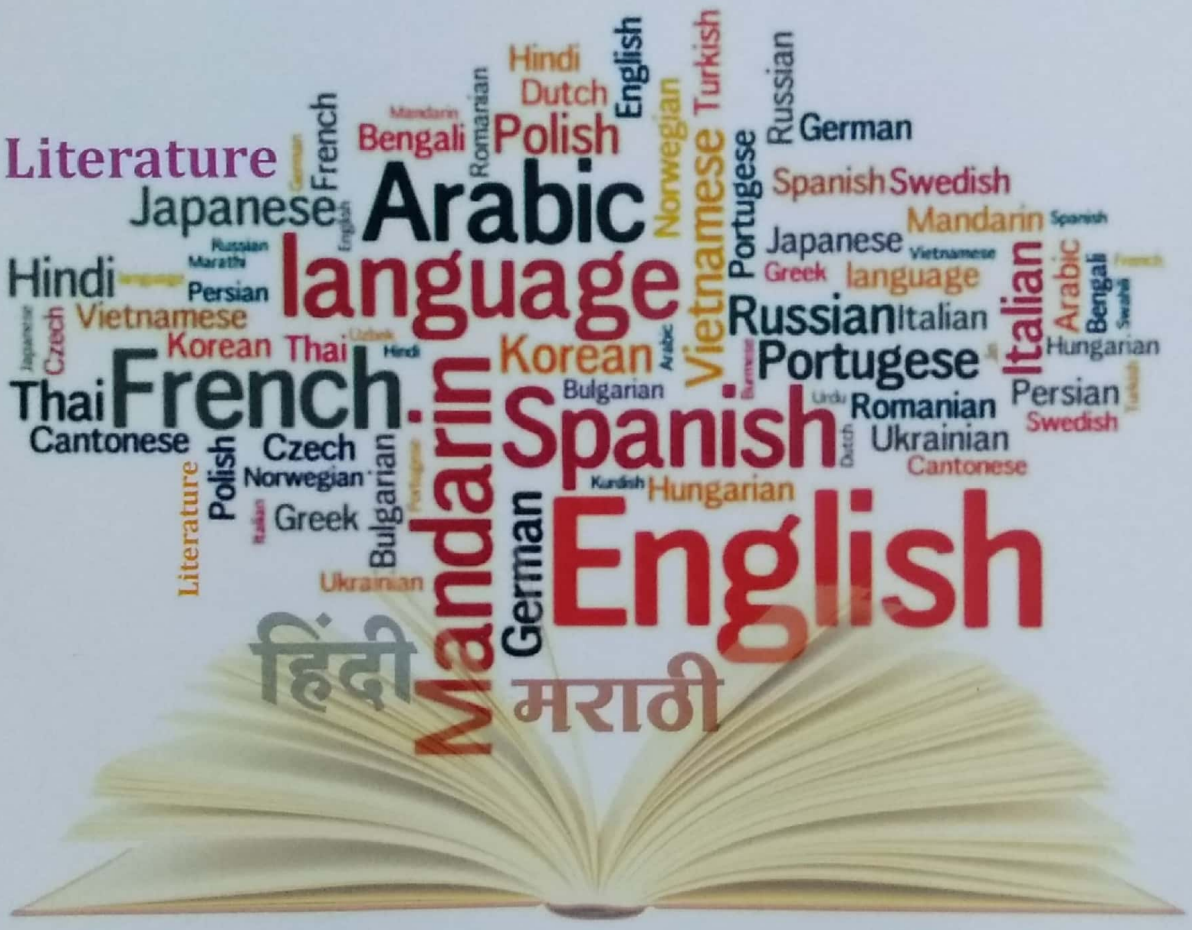

Guest Editor:
Dr. B. S. Jagdale
Principal
MGV's Arts, Science & Commerce College,
Manmad, Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

Executive Editor of the issue :
Dr. P. G. Ambekar
Dr. V. T. Thorat
Dr. Shailaja Jaiswal
Prof. Mrs. Kavita Kakhandaki
Prof. J. P. Jondhale
Prof. M.M. Ahire
Dr. Mrs. Yogita Ghumare

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 117- Literature & Translation
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	English Section		
1	Translation: Transformation of Socio-Cultural Ethos	**Dr. G.A. Ghanshyam**	05
2	Literature and Translation : An Overview	**Dr. Sannabasanagouda G. Dollegoudar Patil**	10
3	Onomatopoeia : Towards an Understanding of Some Observances	**Dr. A. Kishore Kumar Reddy**	15
4	Translation and Transcreation : The Enrichment of Indian English Literature	**Dr. Vaibhav Sabnis**	21
5	The Difficulties with Translation : Some Critical Observations	**Dr. Leena Pandhare**	25
6	Recent Kannada Literature and Translation	**Dr. Kalyan Kokane & Mrs. Kavita Kakhandaki**	27
7	A Critical Study of Marathi Autobiography *UPARA* Translated into English	**Dr. Bharati S. Khairnar**	31
8	Culture and Translation : A Brief Study of *Old Stone Mansion (Wada Chirebandi)*	**Mr. Kishor Ahire**	35
9	Adaptation : A New Language of Literary Translation	**R.V. Tribhuvan**	38
10	Translation : A Linguistic Study of the Text	**Milind Ahire & Dr. Bharati Khairnar**	41
11	The Anxiety of Authenticity in Literary Translation	**Prof. Mukund Bhandari**	44
12	The Task of the Translator in the Process of Translation.	**Dr. Premal R. Deore**	46
13	Mahesh Elkunchwar's *'The Old Stone Mansion'*: A Translated Work	**Mr. Kamalakar Gaikwad**	48
14	Understanding Machine Translation Technology	**Prof. Swapnil Alhat**	53
15	Organizing the Disorganized: Gulzar's Translation of Kusumagraj's poem "Kana"	**Dr. Sandeep Wagh**	57
	हिंदी विभाग		
16	साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद की समस्याएँ	**प्रो. शकीला खानम**	59
17	सूचना प्रौद्योगिकी में अनुवाद का महत्त्व , समस्याएँ और संभावनाएँ	**डॉ. पूर्णिमा आर.**	63
18	अनुवाद का महत्त्व	**प्रो. नवनीत चौहान**	67
19	अनुवाद एवं भाषायी एकता	**डॉ. सरोज गुप्ता**	69
20	अनुवाद विधा का विकास	**डॉ. योगिता हिरे एवं डॉ. शैलजा जायसवाल**	72
21	अनुप्रयुक्त विज्ञान अनुवाद : हिंदी का विस्तार	**डॉ. राजनारायण अवस्थी**	76
22	हिंदी साहित्य का अन्य भाषाओं में अनूदित साहित्य	**डॉ. कृष्णकान्त मिश्र**	81
23	अनुवाद साहित्य में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य	**डॉ. योगिता घुमरे (उशिर), डॉ.जालिंदर इंगले**	86
24	अनुवाद की अवधारणा एवं रोजगार के अवसर	**डॉ. सुनीता कावले**	89
25	मराठी से हिंदी में अनूदित लोकसाहित्य (लोकोक्ती, कहावते, मुहावरो के संदर्भ में)	**प्रा. कैलास बच्छाव**	92
26	अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग	**अविनाश के.**	95
27	अनुवाद में तकनीकी भाषा का प्रयोग	**डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी**	99
28	अनुवाद की प्रासंगिकता	**डॉ. लोकेश्वर सिन्हा**	102
29	हिंदी साहित्य में अनुवाद परम्परा विकास	**डॉ. मिलिंदराज बुक्तुरे**	105
30	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की उपादेयता	**प्रा. रविंद्र ठाकरे**	108

THE VOICE

Vol. III, No. I, June 2016 ISSN NO: 2348-6708
A Journal of GBKS
An International Refereed Research Journal

Volume. III No. 2 April – June, 2016

GAUTAM BUDDHA KALYAN SANSTHAN
Uttar Pradesh 273010 India
www.gbks.co.in

THE VOICE

CHIEF PATRON

Prof. Surendra Singh Kushwaha
Ex- Vice Chancellor
Ranchi & Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith University

CHIEF EDITOR

Chitrasen Gautam
Secretary/Founder
Gautam Buddha Kalyan Sansthan (GBKS)

EDITORIAL BOARD

Dr. Chunnu Prasad
Academic officer, NIOS
Ministry of HRD, Govt. Of India

Suraj Yengde
Doctoral Candidate
University of the Witwatersrand, S.A

Munmi Sen
Assistant Professor
Gauhati University, Assam

Prof. Amita Singh
Professor, CSLG, JNU
Secretary General, NAPSIPAG

Dr. Rajesh Kumar
Associate Professor
Buddha PG College, Kushinagar

Dr. Kesheo Prasad
Assistant Professor
Dept. of Civil, IIT BHU

Dr. Brijesh Asthwal
Assistant Professor
Deptt. of Pharmacology, IMS BHU

Dr. Sandeep Kumar
Assistant Professor
Somani College of Commerce, Jodhpur

Dr. Hossein Omidi
Assistant Professor
Iranian Mnst of Train & Edu

Prakash Chandra Dilare
Faculty Member
Deptt. of Sociology, GBU

Suresh Prasad Ahirwar
Assistant Professor
Govt. College, Seoni M.P

Resham Lal
Assistant Professor
M.G.K.V.P. Varanasi

Dr. Rahul Raj
Assistant Professor
Faculty of Arts, BHU

Dr. Virendra Kamalvanshi
Assistant Professor
Dept. of Agri Eco, IAS,BHU

Dr. Rajan Kumar
Assistant Professor
Dept. of Farm Engg., IAS, BHU

Dr. B. P. Singh
Assistant Professor
Faculty of Commerce, BHU

Mithilesh Kumar
Deptt. of Hindi
Faculty of Arts, BHU

Dr. Nazia Khan
Assistant Professor
CPS, JMI

Ashish Gupta
Faculty of Commerce
Banaras Hindu University

Sameer Shekhar
Faculty of Commerce
Banaras Hindu University

Amol Madame
CSSS/SSS,
Jawaharlal Nehru University

ADVISORY BOARD

Prof. Vivek Kumar
School of Social Sciences, JNU

Prof. V. Shunmugasundaram
Faculty of Commerce, BHU

Prof. B .K. Singh
Faculty of Commerce, BHU

Prof. N. Sukumar
Dept. of Political Science, DU

Prof. Ajeya Kumar Gupta
D.D.U. Gorakhpur University

Dr. Aftab Alam
Head, Zakir Hussain College, DU

Dr. Anusa Daimon
University of Free State, S.A

Dr. S. Veeramani
Centre for Management Studies, JMI

Dr. Surendra Sharma
Assistant Director, MSME

Disclaimer: All views and opinions expressed in The Voice are the sole responsibility of the author Concerned. No part of any paper published in the journal can be reproduced without the prior permission of the Chief Editor, The Voice.

Published by ***Chitrasen Gautam*** on behalf of the

© GAUTAM BUDDHA KALYAN SANSTHAN Deoria, Uttar Pradesh-273010, India

THE VOICE

Vol. III, No. I, March 2016 ISSN NO: 2348-6708

CONTENTS

⇨ **समकालीन हिन्दी कविता : अपने समय का दस्तावेज** 1-8
डॉ0 आशीष कुमार श्रीवास्तव

⇨ **वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन और अनुवाद** 9-11
डॉ0 आनन्द कुमार यादव

⇨ **नैषध के आलोक में भौतिक तथा रूपात्मक सौन्दर्य** 12-25
डॉ0 रश्मि कुमारी

⇨ **अतिरेकों के युग में भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा एवम् दिशा** 26-28
कल्पना सिंह

⇨ **सांप्रदायिकता और भीष्म साहनी का तमस** 29-33
मेघा

⇨ **स्वातंत्र्योत्तर महिला हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के स्वर** 34-37
संजय

⇨ **सामाजिक विचार धारा और तुलसी की नारी** 38-42
आनन्द कुमार सिंह

⇨ **डॉ0 अम्बेडकर के सामाजिक न्याय की अवधारणा** 43-47
मधु कुमारी सोनकर

⇨ **महर्षि कपिल के सम्बन्ध में आचार्य शंकर के विचार** 48-52
मनीषा कुमारी

⇨ **घरेलू हिंसा के सम्बन्ध में महिलाओं को कानूनी अधिकार** 53-57
निखिल मालोत

⇨ **सौन्दरनन्द का कलापक्षीय सौन्दर्य** 58-61
निशा त्रिवेदी

⇨ **विभाजन का त्रासद दस्तावेज–झूठा सच** 62-67
मुकेश कुमार मीणा

⇨ **बौद्ध साहित्य में वर्ण व्यवस्था : स्वरूप एंव स्थिति** 68-82
सुनीता

⇨ **दिल्ली सल्तनत की आर्थिक व्यवस्था** 83-82
रजत लाल

⇨ **शिवपपुराण का ऐतिहासिक एवं पर्यावरण विवेचन** 83-89
पुनीत आमेटा

⇨ **केरल का हिन्दी कथा साहित्यः विभिन्न वादों का प्रभाव** 90-98
प्रदीप कुमार मौर्य

⇨ **बौद्ध दर्शन में 'प्रतीत्यसमुत्पाद' की अवधारणा** 97-99
नवीन कुमार सिंह

⇨ **सामाजिक चेतना को व्यक्त करती दलित आत्मकथाएँ** 100-109
डॉ राजीव कुमार

⇨ **20वीं शताब्दी के प्रमुख क्रान्तिकारियों के विचार : समाजवाद के संदर्भ में** 110-127
रवि शेखर सिंह

⇨ **जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि** 128-132
विकास सिंह

⇨ **प्रगतिवादी चिन्तन दृष्टि : एक विवेचनात्मक अध्ययन** 133-137
अपराजिता मिश्रा

⇨ **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की समस्याएं तथा समाधान** 138-142
अमित कुमार

⇨ **भारत–बांग्लादेश सीमा प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियां (राष्ट्रीय सुरक्षा के विशेष संदर्भ में)** 143-147
रितेश कुमार चौरसिया

⇨ **भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति** 148-153
कुलदीप पाण्डेय

⇨ **एस0के0 ओबेराय वाया 17–रानडे रोड** 154-162
अरविन्द कुमार यादव

⇨ **बौद्ध साहित्य में प्रशासन की अवधारणा** 163-170
डॉ0 उमेश चन्द्र सिंह

⇨ **लोक साहित्य एक परिचयात्मक अध्ययन** 171-173
चुकी भूटिया

⇨ **जनजातीय ललित कलाओं में रेखा–चित्रण का पारस्परिक अंतः सम्बन्ध** 174-179
मादी लिण्डा

⇨ **कला सिनेमा आन्दोलन**
माया मिश्रा 180-183

⇨ **शेख अहमद सरहिंदी और इनकी विचारधारा** 184-191
मो0 दिलशाद अहमद

⇨ **धर्मनिरपेक्षतावाद का गैरपरंपरागत दृष्टिकोण : महात्मा गाँधी के विशेष सन्दर्भ में** 192-198
जगदम्बा कुमार गोंड

⇨ शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता के सन्दर्भ में मुस्लिम महिलओं की परिवर्तनशील सामाजिक प्रस्थितिकी प्रस्थितिकी एवं भूमिका 199-204
श्रीजा तिवारी

⇨ गाँवों के विकास व संवर्धन में शहरीकरण की भूमिका एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 205-210
राजा बाबू गुप्ता

⇨ रामस्वरूप चतुर्वेदी का साहित्येतिहास लेखन : एक विवेचन 211-216
अविनाश के0

***

रामस्वरूप चतुर्वेदी का साहित्येतिहास लेखन : एक विवेचन

अविनाश के0*

डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी का हिन्दी साहित्येतिहास लेखन अपनी युगीन संवेदनाओं से परिचालित होते हुए भी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि का ही विस्तार कहा जा सकता है। वास्तव में डॉ.चतुर्वेदी की इतिहास-दृष्टि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास लेखन की पूरक बनकर उपस्थित होती है, क्योंकि आचार्य शुक्ल का इतिहास जहाँ समाप्त होता है, उसके आगे डॉ.चतुर्वेदी का इतिहास लेखन संभावनाओं की तलाश करता है। आचार्य के साहित्येतिहास लेखन का अन्त छायावादी काव्य के साथ हो जाता है, किन्तु उनकी इतिहास, साहित्य, समाज एवं साहित्येतिहास सम्बन्धी मान्यताएँ गतिशील रूप में सक्रिय रहती हैं, जिसे डॉ.चतुर्वेदी अपने साहित्यिहास लेखन का आधार बनाकर अगली कड़ी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि डॉ.चतुर्वेदी के इतिहास लेखन का एक तिहाई भाग आधुनिक साहित्य के विवेचन में अपनी ऊर्जा निवेश करता है।

डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी के इतिहास ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' का प्रकाशन सन् १९८६ ई. में हुआ, किन्तु इससे पूर्व उन्होंने 'इतिहास और आलोचना दृष्टि' (१९८२) लिखी थी। वे अपनी 'संवेदना के विकास' को इसी ग्रंथ का रचनात्मक प्रतिफलन मानते हैं - "इतिहास और आलोचना-दृष्टि' (१९८२) शीर्षक के पुस्तक के लिए जो तैयारी हुई थी वह अब पूर्णतर और रचनात्मक रूप में प्रतिफलित हो रही है।" अपने साहित्येतिहास लेखन को अधिक विस्तारित रूप देने के लिए अपनी 'संवेदना का विकास' की मान्यताओं और प्रायः उसी सामग्री एवं लेखन का उपयोग करते हुए डॉ.चतुर्वेदी ने 'हिन्दी काव्य संवेदना का विकास' और 'हिन्दी गद्य संवेदना का विकास' शीर्षक इतिहास ग्रंथ भी लिखे हैं। ये दोनों ग्रंथ उनके 'संवेदना का विकास' के ही पुनः प्रकाशन कहे जा सकते हैं, क्योंकि इतिहास-दृष्टि के रूप में इसमें किसी भी नयी पद्धति या नवीन मान्यता की स्थापना करने का प्रयास नहीं किया गया है। अतः डॉ.चतुर्वेदी की इतिहास-दृष्टि को 'हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास' इतिहास ग्रंथ को केन्द्र में रखकर सम्पूर्णतः जाना जा सकता है।

प्रायः आचार्य शुक्ल की मान्यताओं को मानने वाले डॉ.चतुर्वेदी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की इतिहास-दृष्टि एवं आलोचकीय मूल्य 'रामचरितमानस' से अधिक उनके युगीन साहित्य-सृजन से परिचालित मानते हैं। उन्होंने इसका सिद्धान्तीकरण करते हुए लिखा है - "आलोचना और इतिहास-विवेक समकालीन साहित्य अध्ययन और उसकी परख से निःसृत होकर तथा युगीन सन्दर्भों से जुड़कर ही प्रामाणिक तथा प्रगतिशील बनता है।...रामचन्द्र शुक्ल

*

सांस्कृतिक मूल्यों के लिए रामचरितमानस को भले केन्द्र में रखते हों, पर उनका आलोचना और इतिहास-विवेक उनके युगीन साहित्य-सृजन छायावाद से जुड़कर ही पुष्ट हुआ है।" किन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि स्वयं डॉ.चतुर्वेदी ने अपने समकाल से बहुत ही कम ग्रहण किया, जिससे उनका आलोचना एवं साहित्य विवेक आचार्य शुक्ल से बहुत अधिक आगे नहीं बढ़ सका।

उन्होंने अपने 'संवेदना के विकास' में पूर्णतः आचार्य शुक्ल के काल-विभाजन एवं नामकरण को स्वीकार कर लिया है। प्रायः आचार्य शुक्ल के नामकरण एवं काल-विभाजन को कई स्थानों पर नए आधार देने का प्रयास दिखाई देता है। जैसे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा प्रयुक्त 'वीरगाथा काल' नामकरण को अनुचित ठहराते हुए 'आदिकाल' नामकरण प्रस्तावित किया था, जो कि साहित्यिक प्रवृत्ति एवं साहित्येतिहास के सन्दर्भ में सही कहा जा सकता है, किन्तु डॉ.चतुर्वेदी सप्रयास इसे सिद्ध करने पर तुल जाते हैं कि आचार्य शुक्ल द्वारा किया गया 'वीरगाथा काल' नामकरण ही सही है।

भाषा और साहित्य के आरंभ की शुरुआत के लिए डॉ.चतुर्वेदी ने एक कसौटी तय की है। हिन्दी के विकास के सम्बन्ध में उनका मत है, इस सन्दर्भ" में एक कसौटी यह हो सकती है कि जहाँ भाषा में परसर्ग-रूप उभर आए हैं वहाँ से हिन्दी का आरंभ माना जाए, क्योंकि आधुनिक आर्य भाषाओं के विश्लेषणात्मक रूपों की यह एक सही पहचान होगी।" इसी प्रकार आदिकालीन साहित्य के आरंभ को तय करने के लिए भी उन्होंने एक पैमाना तय किया है - "किसी साहित्य के आरंभ की पहचान वहाँ की जा सकती है, जहाँ वह धार्मिक कर्मकाण्ड और रहस्य भावना से क्रमशः उन्मुक्त हो रहा है। संगीत, नृत्य, नाट्य और चित्रकला के बारे में भी यह बात सच होगी।"

यह आचार्य शुक्ल की उस धारणा की पुनरावृत्ति है, जिसमें उन्होंने आदिकालीन (वीरगाथाकालीन) जैन-नाथ साहित्य को धार्मिक साहित्य मानते हुए साहित्य क्षेत्र से बाहर रखने का सुझाव दिया था। इसे आगे के आलोचकों ने यह कहकर खारिज करने का प्रयास किया कि इसी तर्क को ध्यान में रखा जाए तो भक्तिकाल का सारा साहित्य, साहित्य क्षेत्र से वंचित हो जाएगा, जो हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधि काल माना जाता है। इसी मान्यता का सैद्धान्तीकरण यहाँ डॉ.चतुर्वेदी ने किया है। जहाँ तक भाषा के परसर्ग-रूपों का विकास है, उसकी निश्चित तिथि तय नहीं की जा सकती है। वह कई पीढ़ियों तक घटित होनेवाली घटना थी। ऐसे में मात्र धार्मिक कर्मकाण्ड से मुक्ति को साहित्य का आरंभ मानना प्रश्नाकिंत होता है। रही रहस्य भावना की बात तो वह तो कबीर, जायसी और यहाँ तक कि छायावादी कवियों में भी मिलती है, ऐसे में क्या हिन्दी साहित्य का आरंभ प्रगतिवादी साहित्य से माना जाना चाहिए? जहाँ तक संगीत, नृत्यादि की बात है, वह तो अभी तक धार्मिक भावना से मुक्त नहीं हो पाए हैं, तो क्या ऐसे में उन्हें कला क्षेत्र से वंचित कर दिया जाना चाहिए? साहित्य के अपने मूल्य होते हैं, वह हमेशा सामाजिक

नियमों के अधीन नहीं होते हैं। सामाजिक मूल्य एवं साहित्यिक मूल्यों को इतना परस्पराश्रित नहीं माना जा सकता और न उनके सम्बन्ध को इस प्रकार की एकांगी दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता है।

डॉ.चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य की दृष्टि के केन्द्र में चित्रित होनेवाली विषय-वस्तु, मानव एवं साहित्य के सम्बन्धों को भी सैद्धान्तिक रूप देने का प्रयास किया है। उनके साहित्येतिहास में कई बार इस धारणा की पुनरावृत्ति हुई है कि- "मनुष्य की अवधारणा के रूप हिन्दी साहित्य में कई बार बदलते हैं, और इसी के साथ परम तत्व को लेकर उनके रिश्ते भी। आदिकाल के प्रसंग में हमने लक्षित किया था कि यहाँ मनुष्य की ईश्वर की महिमा से युक्त रूप में वर्णन हुआ है, जबकि भक्तिकाल में यह चित्रण ईश्वर का मनुष्य रूप में हुआ है, आगे फिर रीतिकाल में ईश्वर और मनुष्य दोनों का मनुष्य-रूप में चित्रण होता है। आधुनिक काल में आकर मनुष्य सारे चिन्तन का केन्द्र बनता है, और ईश्वर की धारणा व्यक्तिगत आस्था के रूप में स्वीकृत होती है, साहित्य या कि कलाओं में उसका चित्रण प्रासंगिक नहीं रह जाता।"

उन्होंने अपनी इस धारणा की पुनरावृत्ति आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रत्येक युग के आरंभ में ही नहीं, अपितु कई बार कवि-दर-कवि की है। केवल छायावाद में ही क्रमशः प्रसाद, निराला एवं पंत का मूल्यांकन इसी मान्यता को कसौटी बनाकर किया गया है। इतना ही नहीं, निराला की 'राम की शक्तिपूजा' एवं 'तुलसीदास' कविताओं की तुलना करते समय गोस्वामी तुलसीदास को बार-बार उद्धृत करने तक ठीक था, किन्तु रीतिकालीन कवियों की प्रसाद की 'कामायनी' से तुलना कर सम्पूर्ण छायावाद की मूल प्रेरणा को रीतिकालीन साहित्य से जोड़कर सिद्ध करने का प्रयास साहित्येतिहासकार की हठधर्मिता को उजागर करता है। इसी के साथ आचार्य शुक्ल की मान्यता कि छायावाद बांग्ला साहित्य - विशेषतः रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीतांजलि' के मार्ग से विदेश से छाया ग्रहण करनेवाला काव्यान्दोलन है, इसे सिद्ध करने के लिए इतिहासकार बार-बार मराठी से ग्रहण की गई द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता और बांग्ला की कोमलकान्त पदावली युक्त शब्दावली की तुलना करता है। निराला की काव्य-प्रेरणा के रूप में भी उसने बांग्ला नवजागरण की चेतना को रेखांकित किया है, जहाँ वे छायावाद को शक्ति काव्य भर मानकर उसे 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' का काव्य कहते हैं। उन्होंने अपनी नई उद्‌भावना करते हुए सांस्कृतिक पुनर्जागरण को राष्ट्रीय पुनर्जागरण पर वरीयता दी है। उन्होंने लिखा है - "यहाँ शक्ति काव्य का सामान्य साधारण अर्थ 'राष्ट्रीय काव्य' नहीं लगाना है। इस टिप्पणी का उद्देश्य राष्ट्रीय काव्य के महत्व को कम करना नहीं, पर यह ध्यान दिलाना है कि छायावादी काव्य में राष्ट्र जागरण से अधिक समग्र चेतना का जागरण और आह्‌वान है, उसमें अन्तर्निहित शक्ति के विकास का रचनात्मक उपक्रम है। यहाँ राष्ट्रीय से अधिक सम्पूर्ण सांस्कृतिक जागरण प्रधान है, राष्ट्रीय जागरण वस्तुतः सांस्कृतिक जागरण के अंग रूप में आता है, जो पुनर्जागरण की मूल धारा के अनुरूप है। यों कह सकते हैं कि छायावाद की राष्ट्रीयता में आधार राजनीति की अपेक्षा संस्कृति है।" डॉ. चतुर्वेदी ने शक्ति काव्य की परिभाषा करना अनिवार्य नहीं समझा। उनके ही

लहज़े में कहा जाए तो, यों उन्होंने जो विश्लेषण प्रस्तुत किया है उसमें छायावाद की समकालीन राष्ट्रीय काव्यधारा एवं हालावाद को अनदेखा कर दिया गया है।

आधुनिक काल का आरंभ नाट्य साहित्य से होता देख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल चौंक गए थे, ठीक वैसे ही डॉ.चतुर्वेदी न केवल चौंकते हैं, अपितु वे उसका उत्तर भी खोजने का प्रयास करते हैं। उन्होंने उसका उत्तर खोजने के क्रम में भारतीय पुनर्जागरण (या हिन्दी प्रदेश में होनेवाले पुनर्जागरण मात्र) को व्याख्यायित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार इस पुनर्जागरण की चेतना में समग्रता की चेतना निहित थी और नाटक अपने आप में सामाजिक विधा है। इसका मंचन अकेले नहीं हो सकता और आस्वादन भी। ऐसे में नाटकों से हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का प्रवर्तन होना उन्हें अचरज का विषय नहीं लगता है। वे भारतीय (हिन्दी) नवजागरण की अन्य विशेषताएँ गिनाते हुए उसका पूर्ण रचनात्मक समाहार भारतेन्दु हरिश्चंद्र में पहले पहल पाते हैं, किन्तु उनके अनुसार- "पुनर्जागरण का भारतीय साहित्य में पहला प्रतिफलन माइकेल मधुसूदन दत्त के बँगला (बांग्ला) काव्य 'मेघनाद वध' (१८६१) को माना गया है। परम्परा से मेघनाद के उपेक्षित चरित्र को इसमें एक नयी सहानुभूति देने का, नयी चिन्तन प्रक्रिया में सफल उपक्रम है।" और इसे आगे समझाते हुए इतिहासकार ने भारतेन्दु की पुनर्जागरण की चेतना को भी बांग्ला प्रभाव सिद्ध करने का प्रयास किया है।

वास्तविक रूप में देखा जाए तो डॉ.चतुर्वेदी का यह इतिहास हिन्दी काव्य संवेदना को ही रेखांकित करने का अधिकांश प्रयास करता है, किन्तु इसमें उपन्यास, कहानी, निबंध आलोचना आदि को भी स्थान दिया गया है, जो अपेक्षाकृत कम है। हिन्दी उपन्यास का आरंभ वास्तविक रूप में प्रेमचन्द से ही माना गया है। इसके पीछे मान्यता यह हो सकती है कि वास्तविक रूप में हिन्दी उपन्यास प्रेमचन्द से ही सामान्य जन-जीवन से जुड़ता हुआ दिखाई देता है। किन्तु अब यह पुरानी धारणा हो चली है कि भारतेन्दु युगीन सुधारवादी, जासूसी, अय्यारी आदि प्रवृत्ति के उपन्यास समान्य जन-जीवन से नहीं जुड़े थे। राजेन्द्र यादव ने अपनी पुस्तक 'दयनीय महानता की दिलचस्प दास्ताँ' में इसे सप्रमाण सिद्ध किया है कि जासूसी उपन्यासों का भी अपना समाजशास्त्र था। आचार्य शुक्ल की भाँति डॉ.चतुर्वेदी भी इन उपन्यासों को हिन्दी का प्रचार करने का साधन मात्र मानते हैं और इन्हें आज के लोकप्रिय साहित्य के समकक्ष रख देते हैं, जो किसी भी दृष्टि से न्यायसंगत नहीं लगता है। हिन्दी की सैद्धान्तिक आलोचना का आरंभ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के 'नाटक' निबंध से और व्यावहारिक आलोचना का आरंभ लाला श्रीनिवास दास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' के नाटक की बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखी गई समीक्षा 'सच्ची समालोचना' से मानते हैं। लेकिन वे हिन्दी में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों आलोचना के शिखर पुरुष के रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को ही स्थापित करते हैं।

यद्यपि इतिहासकार ने जयशंकर प्रसाद एवं अज्ञेय के कवि रूप के साथ-साथ उपन्यासकार, कहानीकार एवं आलोचक रूप को भी रेखांकित किया, किन्तु निराला, मुक्तिबोध

आदि रचनाकारों के सन्दर्भ में वे ऐसा नहीं करते हैं। इसी प्रकार यह मात्र प्रत्येक युग के प्रतिनिधि रचनाकारों का इतिहास मात्र कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें सभी युगों के सभी रचनाकारों के कृतित्व की समीक्षा नहीं की गई है। भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर, मीराँ और तुलसी के अतिरिक्त सभी कवियों के नाम गिना दिए गए हैं, इतना ही नहीं अष्टछाप के कवियों में भी केवल कुंभनदास पर पाँच-दस पंक्तियाँ लिखकर अन्य कवियों का केवल नामोल्लेख कर दिया गया है। रीतिकालीन कवियों में भी केशव, भूषण, पद्माकर, देव, मतिराम आदि कुछेक कवियों के साहित्य पर प्रकाश डालकर अन्य कवियों के नाम गिना दिए गए हैं। यही क्रम भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग आदि में भी जारी रखा गया है। छायावादी काव्य के समकालीन राष्ट्रीय काव्यधारा एवं हालावादी काव्यधारा का तो उल्लेख मात्र किया गया है, जिस कारण माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि महत्त्वपूर्ण कवियों का योग्य विवेचन-विश्लेषण इस इतिहास में नहीं हो पाया है। उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि से सम्बन्धित लेखन में भी यही नीति अपनायी गई है। प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय को आवश्यकता से अधिक तूल दिया गया है, जबकि मुक्तिबोध, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन के साथ सौतेला व्यवहार किया गया है। आचार्य शुक्ल की 'विरुद्धों का सामंजस्य' की अवधारणा पर इतिहासकार का श्रद्धा की हद तक विश्वास है, जो वह अपने विवेचन में नहीं दिखा पाया।

अब तक के इतिहासकारों में केवल आचार्य शुक्ल की दृष्टि कवियों की भाषा की ओर गई थी, डॉ.चतुर्वेदी काव्य-भाषा की विवेचना के माध्यम से साहित्य संवेदनाओं को परखने की परम्परा का विकास अपने चरम तक करते दिखाई देते हैं। उन्होंने प्रत्येक युग के प्रायः प्रत्येक प्रतिनिधि कवि की काव्यभाषा को जाँचा-परखा एवं उसकी संवेदनाओं तक काव्य-भाषा के माध्यम से पहुँचने का स्तुत्य प्रयास किया है। साहित्येतिहास की तुलनात्मक लेखन पद्धति का चरम विकास डॉ.चतुर्वेदी के साहित्येतिहास लेखन में दिखाई देता है। उन्होंने साहित्येतिहास लेखन की तुलनात्मक पद्धति का जैसा संतुलित प्रयोग किया है, वैसा संभवतः हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में किसी भी साहित्येतिहासकार ने नहीं किया। इस प्रक्रिया में वे पश्चिमी साहित्य, संस्कृत, भारतीय, राष्ट्रीय, हिन्दी साहित्य आदि किसी भी धारा से आक्रान्त नहीं होते, बल्कि जहाँ जिस भी भाषा, धारा, काल के कवि-रचनाकार से तुलना की जा सकती है, वे बेहिचक करते हैं, इस सन्दर्भ में वे पूर्णतः पूर्वाग्रहों से मुक्त हो पाने में सफल नज़र आते हैं। जैसे उन्होंने निराला की तुलना अंग्रेज़ी कवि ह्विटमैन से की है, उसी क्रम में 'कामायनी' के अप्रकाशित पद्यों की तुलना रीतिकालीन कविता से, 'वेस्ट लैंड' के अप्रकाशित पद्यों की 'तागवद्गीश्रीमद्भा' की पंक्तियों से बेहिचक एवं योग्य तुलना प्रस्तुत की है। काव्यभाषा को विश्लेषित करने के क्रम में उन्होंने काव्य-लय एवं गद्य की लय को भी रेखांकित किया। प्रतिनिधि कवियों को विश्लेषण का विषय बनाए जाने के कारण सामग्री की निःसंदिग्धता पर भी उन्होंने बराबर ध्यान दिया, जिससे साहित्य में विश्वसनीयता आ गई है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की इतिहास-दृष्टि का अनुगमन करने के पश्चात् भी अपनी विवेचन की मौलिकता एवं लेखन की सरसता के कारण यह

साहित्येतिहास ग्रंथ अपने आप में डॉ.रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सन्दर्भ :

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास रामस्वरूप चतुर्वेदी.डॉ -, लोकभारती प्रकाशनदरबारी , -इलाहाबाद ,महात्मा गाँधी मार्ग ,बिल्डिंग01 उन्नीसवाँ संस्करण ,: 2006.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : पुनर्लेखन की समस्याएँ हिन्दी माध्यम ,सम्पादन श्याम कश्यप – ए.ई ,दिल्ली विश्वविद्यालय ,कार्यान्वय निदेशालय/-दिल्ली ,मॉडल टाउन 6 09 प्रथम संस्करण ,: 1994.
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन आनन्द नारायण शर्मा –, अनुपम प्रकाशनप् ,पटना ,रथम संस्करण : 1987.
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन शिवकुमार.डॉ –, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेडनई , प्रथम संस्करण ,दिल्ली: 1978.
5. हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन रूपचन्द पारीक.डॉ –, सरस्वती पुस्तक सदन प्रथम संस्करण ,आगरा ,: 1972.
6. हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास ,साहिबाबाद ,बिभू प्रकाशन ,किशोरीलाल गुप्त.डॉ – संस्करण: 1978.

****